

कृतज्ञता की एक प्रार्थना

थैंक्सगिविंग पर्व के उपलक्ष्य में

२३ नवम्बर, २०२३

परिचय

श्रद्धाभाव से पूरित, होडिनोशोनी से यह प्रार्थना प्रकृति के हर पहलू का व साथ ही महान आत्मा अर्थात् परमेश्वर की करुणामयी इच्छाशक्ति का स्तुतिगान करती है। यह प्रार्थना पीढ़ियों से होडिनोशोनी लोगों की मौखिक परम्परा द्वारा हस्तान्तरित की जाती रही है जिनमें छः मूल निवासी जनजातियाँ शामिल हैं—मोहॉक, ऑनन्डागा, ओनायडा, केयुगा, सेनेका, और तस्करोरा जो कि अमरीका के उत्तर-पूर्व क्षेत्रों तथा कैंनेडा में स्थित हैं। नवम्बर २०१६ में मोहॉक भाषा में इस प्रार्थना की रिकॉर्डिंग का निर्माण किया गया था जब एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के दो सदस्यों ने सन्त रीजिस मोहॉक जनजाति के एक आदरणीय बुजुर्ग व शिक्षक, कैरोल रॉस से भेंट की थी।

इसके मुख्य पृष्ठ पर मोहॉक भाषा में और अंग्रेज़ी भाषा में इस प्रार्थना की रिकॉर्डिंग दी गई हैं।

प्रार्थना

ध्यान से सुनो,
मेरे मित्रो व परिवारजनो।
आओ, हम अपने मन को एक करें।
मैं इस प्रार्थना से आरम्भ करता हूँ।

हम अपनी माता, धरती माँ के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो हमारा पोषण करती हैं।
हम नदियों और झरनों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो हमें जल प्रदान करते हैं।

हम समस्त जड़ी-बूटियों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो हमारे रोगों के उपचार के लिए औषधियाँ प्रदान करती हैं।
हम मकई और इसके सस्यवर्ग को,
फलियों को और फलों के रसों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो हमें जीवन देते हैं।
हम पेड़-पौधों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो हमें फल देते हैं।
हम वायु के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जिसने हवा चलाकर रोगों को दूर कर दिया है।
हम चन्द्रमा और तारों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जिन्होंने सूर्यास्त होने पर
हमें अपना प्रकाश दिया।
हम अपने दादा जी के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जिन्होंने अपने पोतों-पोतियों की रक्षा की है
और हमें अपनी वर्षा प्रदान की है।
हम सूर्य के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
जो पृथ्वी पर अपनी कृपापूरित दृष्टि बनाए हुए है।
अन्त में, हम कृतज्ञता अर्पित करते हैं,
उन परमेश्वर के प्रति
जो समस्त अच्छाई के मूर्तरूप हैं
और जो अपने बच्चों के भले के लिए समस्त चीजें उपलब्ध कराते हैं।

अंग्रेज़ी भाषान्तर *The Friend: A Religious and Literary Journal*, भाग ५४, क्रमांक ३६, १८८० से।

